SYNOPSIS सार संक्षेप

प्रस्तावित शोध का विषय :–

“छ.ग. जनजातियों के आर्थिक विकास में हस्तशिल्प का योगदान।”

(बस्तर संभाग के विशेष संदर्भ में)

1 परिचय :–

अतीत से ही भारत की कलायें और हस्तशिल्प इसकी सांस्कृतिक और परंपरागत प्रभावशीलता को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम रहे हैं। भारत के हर प्रदेश में कला की अपनी एक विशेष शैली लोककला के नाम से जाना जाता है। लोककला के अलावा भी परंपरागत कला का अन्य रूप हैं। जो अलग जनजातियों और ग्रामीण अंचल में प्रचलित है जिसे जनजाति या कला के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

हस्ताशिल्प के प्रमाण मोहन जोदड़ो व हडप्पा संस्कृति के समय से ही प्राप्त है ये इस बात का साक्ष्य है कि शिल्प का प्रारंभ व महत्व कई युगों स है। आज हमारे देश में जैसे उड़ीसा, मध्यप्रदेश, छ.ग. झारखण्ड, बिहार व उत्तर प्रदेश में हस्तशिल्प का प्रचलन बहुत तेजी से हो रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था में धातु शिल्प की मुख्य भूमिका है यह उद्योग प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से लाखों को रोजगार उपलब्ध कराता है तथा भारतीय कला संस्कृति और विरासत को भी अभिव्यक्त करता है।

बस्तर की काष्ठ कृतियां पर दृष्टीपात करते समय सर्वप्रथम तेरह दिवसीय बस्तर देवीय दशहरा से प्रतिबद्व दो विशाल रथ हमारा ध्यान बरबस ही आकृष्ट करते है। ये रथ काष्ठ निर्मित ही होते है। बस्तर अंचल आदिवासी समाज का बांस से अविछिन्न संबंध है।

बस्तर में धातु शिल्प विद्याा विश्व की प्राचीनतम विधाओं में से एक है। जिसे घड़ा कला के नाम से जाना जाता है। बस्तर में लौह शिल्प की प्रमुख विशेषतायें विभिन्न प्रकार के अलंकृत दिये है। आदिवासी बहुत बस्तर में महिलायें अलंकरण एवं आभूषण पहनने की बहुत शौकीन होती हैं। जनजातीय स्त्री पुरूष कलात्मक ढंग से बालों का श्रृंगार करते है। बस्तर संभाग के शिल्प कला का संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है :–

मिटटी शिल्प, घड़वा कला, काष्ठ शिल्प, लोह शिल्प, घोटुल स्तम्भ बस्तर में गोंदना। छत्तीसगढ़ के समस्त 16 जिलों में जनजाति का निवास है यह क्रमशः बस्तर, जशपुर, कांकेर, सरगुजा, कोरबा, रायगढ आदि है। छत्तीसगढ़ राज्य की कुल जनसंख्या का 16.27 प्रतिशत सरगुजा व जबकि 13.10 प्रतिशत बस्तर संभाग में निवास करती है। छत्तीसगढ़ की कुल जनसंख्या का लगभग 1/3 भाग अनुसूचित जनजाति की संख्या है।

"इसी आधार पर छत्तीसगढ़ को एक जनजाति बहुत राज्य कहा जाता है।"

यहां पर मुख्य रूप से गोंड, हल्बा, भतरा, भाडिया, मुरिया, भैसा दोरल, परजा, गदता, पारधी आदि जनजातियां पायी जाती हैं।

"बस्तर में प्रमुख 24 जनजातियों का निवास है।"

बस्तर इतिहास के संकलित तथ्यों के अध्ययन से यह विदित होता है कि गंगवंशी व नागवंशी राजाओं ने बाहर से आमंत्रित कलाकारों द्वारा बारसूर नारायणपाल आदि स्थानों में पत्थरों से अनेक कलात्मक निर्माण कार्य कराये गये थे। जिनके अवशेष आज भी विद्यमान है।

मानव जीवन में कला का अपना विशेष महत्व है। कालान्तर में बस्तर अंचल का स्थानीय हस्तशिल्प भी उजागर होता चला गया है बस्तर अंचल की हस्तशिल्प कला वर्तमान में पूरे विश्व में अपना अहम् स्थान बना चुकी है।

2. चयनित विषय में पूर्व शोध कार्य का संक्षिप्त सिंहावलोकन :–

बस्तर हस्तशिल्प का कुछ शोधार्थी ने अध्ययन किया है।

1. रिसर्च स्टडी आन बुड हैण्डीक्राप्ट एण्ड कार्वीग इंडस्ट्री एट बस्तर इन छत्तीसगढ़ एण्ड जोधपुर इन राजस्थान

"शोधार्थी डॉ. मनमोहन यादव" (2006)

सामाजिक विज्ञान निकाय के अंतर्गत पी.एच.डी. उपाधि हेतु,

2. बस्तर क्षेत्र के संस्थापत्य का अध्ययन 5 वीं शताब्दी 12 वीं शताब्दी ई. तक पं. रंविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, (सामाजिक विज्ञान निकाय के अन्तर्गत इतिहास विषय में पी.एच.डी. 2002).

"हेमंत सिरमोर शोधार्थी"

3. छत्तीसगढ़ की हल्बा जनजाति में जनाकिंकी का अध्ययन दुर्ग जिले के संदर्भ में पं. रविशंकर शुक्ल विश्व विद्यालय, मानव विज्ञान विषय के अंतर्गत ।

"शोधार्थी श्रीमती संध्या गुप्ता" (2005)

4. छत्तीसगढ़ की रियासतों का विलीनीकरण ऐतिहासिक अध्ययन 1945–1948 पं. रविशंकर शुक्ल विश्व विद्यालय, (सामाजिक विज्ञान निकाय के अंतर्गत इतिहास विषय में पी.एच.डी. उपाधी हेतु वर्ष 2000)

"शोधार्थी लक्ष्मी शंकर निगम"

3. शोध समस्या :–

नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिये सावधानीपूर्वक पर्याप्त अवलोकन व वस्तु विषयक अध्ययन करना शोध कहलाता है जब भी कोई नया आविष्कार या जांच की जाती है तो हमारे समक्ष अनेक समस्याएं उत्पन्न होती है जिसे शोध समस्या की संज्ञा दी जाती है। "समस्या एक ऐसा प्रश्नात्मक वाक्य या कथन होता है प्रश्न करता है कि दो या दो से अधिक चरों के बीच में एक कैसा संबंध है ?

आज बस्तर संभाग के अंतर्गत अनंत संसाधन होने के पश्चात भी यहां पर विकास की कमी है तथा संसाधनों का प्रयोग उचित तरीके से नहीं किया जा रहा है क्योंकि यहां तकनीकी ज्ञान का अभाव है। इसकी निम्नलिखित समस्याएं है।

1. कच्चे माल सुलभ किन्तु अत्यन्त मंहगे होना।

2. रोजगार की जानकारी ना होना

3. विशेषज्ञों की कमी।

4. बैंको का सहयोग न के बराबर मिलना।

5. नई तकनीकी व ग्राहकों के परिवर्तन से अनभिज्ञ।

6. सही मार्गदर्शन व गुणवत्ता तकनीकी की कमी।

शिल्पकारों को अपना पारिश्रमिक उचित रूप से प्राप्त नहीं हो रहा है इसी कारण वे दुसरे कार्य की ओर अग्रसर है। किन्तु सरकार ने इसकी ओर कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाये है व नवीन योजना का प्रतिपादन किया है।

1. कुम्भकार टेराकोर शिल्प योजना (विद्युत चाक प्रदाय):–

2. रायगढ़ जिले में बेलमेटल कलस्टर के लिए स्फूर्ति योजना का संचालन :–

3. बस्तर हस्तशिल्प विकास योजना :–

4. हस्तशिल्पयों के लिए बीमा योजना :–

5. हस्तशिल्प सामग्रीयों का विक्रय :–

4 अध्ययन का उद्देश्य व महत्व :–

प्रकृति ने हर दृष्टिकोण से इस भूतल को नवाजा है। परन्तु लोगों की आर्थिक स्थिति को उन्नत कहना अनुचित होगा।

हस्तशिल्प ग्रामीण भारतीय जनजीवन का एक हिस्सा है। आज के मशीनी युग में भी हाथ से बने कलात्मक वस्तुओं का अपना महत्व है इसलिये न केवल भारत में इन वस्तुओं का आकर्षण बढ़ा है बल्कि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी भारतीय हस्तशिल्प ने अपनी एक जगह बना ली है।

बस्तर की कला ने एक और दूर दराज के देश लोगों को आकर्षित किया है, तो दूसरी ओर छत्तीसगढ़ क्षेत्र के भी अन्य स्थान इससे अप्रभावित नहीं रहे।

इससे निम्नलिखित उद्वेश्य :–

1. बस्तर उद्योगों की समस्या का अध्ययन, विश्लेषण सुझाव।

2. बस्तर संभाग की जनजातियों की आर्थिक स्थिति की अध्ययन करना।

3. जनजातियों व हस्तशिल्प के लिये उपयुक्त परिस्थितियों का अध्ययन करना।

4. जनजातियों के आर्थिक विकास में हस्तशिल्प का योगदान।

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा जनजातीय हस्तशिल्प कला का बस्तर जिले के जनजातियों के आर्थिक विकास में योगदान को जानना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इससे होगी। चूंकि छत्तीसगढ़ को शामिल वर्तमान में सामाजिक, आर्थिक स्थिति ज्ञाप्त होगी। चूंकि इसकी कार्यप्रणाली बहुत विस्तृत है। इसकी संरचना संगठन प्रणाली, व्यवस्था कैसी है तथा इसका विकास में क्या योगदान है। ऐसे ही अनेक प्रश्नों के उत्तर पाने की प्रबल अभिलाषा है। जनजातियों के आर्थिक विकास में बस्तर हस्तशिल्प का क्या योगदान है। इन प्रश्नों के उत्तर गहन छानबीन से ही पाये जा सकते है।

5 शोध परिकल्पना :–

शोध परिकल्पना का आशय प्राकल्पना व पूर्व विचार से लगाया जाता है अर्थात किसी भी विषय के चुनाव के बाद प्रत्येक अनुसंधानकर्ता के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि विषय से संबंधित तथ्यों के संकलन हेतु विविध कल्पनाओं का निर्माण करे ताकि अध्ययन का सम्यक निर्देशन मिल सके। “परिकल्पना दो या अधिक चर राशियों व चरो के संबंध का कथन है”।

प्रस्ताविक शोध कार्य “छ.ग. जनजातियों के आर्थिक विकास में हस्तशिप्त कला का योगदान” का विश्लेषणात्मक अध्ययन है। जो बस्तर संभाग के हस्तशिल्प उद्योग के विशेरू संदर्भ में है। प्रस्तावित शोध कार्य में यह परिकल्पना की गई है कि :–

1. बस्तर जनजातियों के अर्थोपाजन का मुख्य आधार हस्तशिल्पकला है।
2. हस्तशिल्प उद्योग के विकास से बस्तर क्षेत्र के रोजगार में वृद्वि होगी।
3. बस्तर हस्तशिल्प कला को आधुनिककरण ने प्रभावित किया है।
4. बस्तर हस्तशिल्प के संवर्धन और संधारण में राज्य सरकार की योजनाये सहयोगी है।

प्रस्तावित शोध की शोध प्रविधि :–

शोध विषय के अध्ययन हेतु प्रारंभ से ही योजना का निर्माण कर लिया जाता है। अर्थात किसी भी नवीन क्षेत्र की जानकारी प्राप्त करने हेतु शोध प्रविधि का प्रयोग किया जाता है। शोध अध्ययन आर्थिक हो या सामाजिक उसके अध्ययन संबंधी योजना प्रारंभ से ही बना ली जाती है ताकि अध्ययन पश्चात विश्लेषणात्मक विधि से महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हो सके इसी शोध प्रविधि ने समाज के विभिन्न क्रियाओं व घटनाओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया एवं सभी क्रिया कलापो व कारणो के संबंध की व्याख्या किया।

इस शोध अध्ययन के उद्वेश्यों की पूर्ति तथा निर्धारित परिकल्पनाओं के सत्यापन के लिए विभिन्न प्रकार की सूचनाओं सम्यंको व अभिमतो का ंसग्रहण किया जावेगा भौगोलिक व व्यक्तिगत कारणो से आबूझमाड जैसे वृहद्व क्षेत्र तथा सभी शिल्पकारो से संपर्क कर आवश्यक जानकारी एकत्रित करना असंभव होगा इसलिए शिल्पकारो के चयन में दैव निर्देशन विधि का प्रयोग किया जावेगा। अतः प्रस्तुत शोध विषय के अध्ययन में निशचित परिणामों की जानकारी के लिए निम्न प्रक्रिया का अनुसरण किया जावेगा :–

1. क्षेत्र सर्वेक्षण व आंकडो का संग्रहण :–
2. आंकडो का विश्लेषण :–

1. क्षेत्र सर्वेक्षण व आंकड़ों का संग्रहण :– प्राथमिक आंकड़ो के संग्रहण हेतु बस्तर संभाग के हस्तशिल्प कलाकारो मध्यस्थो व अधिकारियों का चयन दैव निर्देशन पद्वति, साक्षात्कार, व अवलोकन द्वारा किया जावेगा।

प्राथमिक संमक :– प्राथमिक संमक से आशय ऐसे संमक से है जिनका संग्रहण शोद्यार्थी द्वारा प्राथमिक रीति के अनुसार संपूर्ण क्षेत्र या समग्र में से एकत्रित किये जाते है।

साक्षात्कार :– साक्षात्कार को एक क्रमबंद्व प्रणाली माना जाता है इसमें एक व्यकित से दुसरे व्यक्ति द्वारा प्रश्न किये जाते है।

अवलोकन :–

किसी भी कार्य को करने का कारण व एक दूसरे से पारस्परिक संबंध को जानने के लिए अवलोकन पद्वति का प्रयोग किया जाता है।

द्वितीयक आंकड़े :–

यह मौलिक रूप से नहीं होते है अर्थात संस्थाओं द्वारा पूर्व संकलित होते है। बस्तर संभाग के हस्तशिल्प व जनजातियों की स्थिति जानने हेतु निम्न आंकड़ो का प्रयोग किया जायेगा :–

1. प्रकाशित पत्र– पत्रिकायें, प्रतिवेदन, समाचार पत्र, शोध पत्र व सरकार प्रलेख
2. हस्तशिल्प उद्योग कार्यालय के प्रकाशित आंकड़े

आंकड़ो का विश्लेषण :–

शोध विधि के अन्तर्गत प्राप्त समंको का सरलता पूर्वक प्रदर्शन हेतु आवश्यक ग्राफो व तालिकाओं का प्रयोग किया जावेगा व सांख्यिकी मापो व सारणीयन तथा आरेखीय चित्रण आदि से संबंधित स्थिति का विश्लेषण किया जावेगा।

उपरोक्त प्रविधियों के माध्यम से शोधार्थी द्वारा बस्तर के जनजातियों के आर्थिक विकास के हस्तशिल्प कला के महत्व और उसके योगदान को प्रदर्शित करते हुये इन जनजातियों के आर्थिक विकास में हस्तशिल्प उद्योगों को विश्व स्तर तक बढाने के उपायों का अन्वेषण किया जायेगा।

7 शोध प्रबंध की रूपरेखा :–

चयनित विषय :– छ.ग. जनजातियों के आर्थिक विकास में

छ.ग. हस्तशिल्प कला का योगदान :–

प्रथम अध्याय – प्रस्तावना

अ. 1.1 विषय का महत्व व वर्तमान अध्ययन का उद्वेश्य :–
1.2 शोध परिकल्पना
1.3 शोध प्रविधि
1.4 शोध अध्ययन का क्षेत्र

ब. हस्तशिल्प उद्योग का सामान्य परिचय

1.5 भारत में हस्तशिल्प

1.6 छ.ग. में हस्तशिल्प

1.7 बस्तर संभाग में हस्तशिल्प

द्वितीय अध्याय :— बस्तर संभाग— एक परिचय

2.1 बस्तर संभाग की भौगोलिक परिपार्श्विक दशाएं —

भू—भौतिक संरचना, जलवायु, अप्रवाह संसाधनिक समृद्धि

2.2 आर्थिक परिवेश

2.3 उद्योग व वाणिज्य

2.4 परिवहन एवं संचार सुविधा

2.5 जनसंख्या वितरण

तृतीय अध्याय :— हस्तशिल्प निर्माण प्रक्रिया

3.1 विश्व में हस्तशिल्प का निर्माण

3.2 भारत में हस्तशिल्प का निर्माण

3.3 छ.ग. में हस्तशिल्प का निर्माण

3.3.1 परम्परागत तकनीकी

3.3. आधुनिक तकनीकी

चतुर्थ अध्याय :– हस्तशिल्प उद्योगों में श्रम व्यवस्था (बस्तर जिले के संदर्भ में)

4.1 हस्तशिल्प उद्योगों में श्रम व्यवस्था

4.2 हस्तशिल्प उद्योगों की श्रम कार्य प्रणाली

4.3 श्रम कल्याणार्थ कार्य (सामाजिक सुरक्षा)

पंचम अध्याय :– हस्तशिल्प उद्योगों की संगठनात्मक संरचना एवं प्रबंधन का सवरूप (बस्तर जिले के संदर्भ में)

5.1 संगठनात्मक संरचना

5.1.1 केन्द्रीय बोर्ड

5.1.2 क्षेत्रीय स्तर अनुसंधान केन्द्र

5.1.3 उप संचनालय

5.1.4 बुनकर सहकारी समिति

5.2 प्रबंध व्यस्था एवं प्रबंधकीय कार्य प्रणाली

5.2.1 पूंजी की व्यवस्था

5.2.2 पूंजी का प्रवाह

5.2.3 पूंजी का प्रत्याय

5.2.4 पूंजी प्रबंध एवं विनियोग

षष्ठम अध्याय :– विक्रय व विपणन व्यवस्था

6.1 क्रय प्रणाली

6.2 क्रय क्षेत्र

सप्तम अध्याय :– विक्रय व विपणन व्यवस्था (बस्तर जिले के संदर्भ में)

7.1 विक्रय पद्वति व बाजार क्षेत्र

7.2 विगत वर्षो का विक्रय विवरण

7.3 विक्रय से संबंधित अनुपात

7.4 विपणन व्यवस्था

अष्ठम अध्याय :– जनजातियों के आर्थक विकास में योगदान

8.1 हस्तशिल्प वस्तुओं का निर्माण

8.2 जीवन निर्वाह का उच्च स्तर होना

नवां अध्याय :– हस्तशिल्प उद्योग के विकास की संभावनायें, समस्याएं सुझााव

समीक्षात्मक निष्कर्ष :– (बस्तर जिले के संदर्भ में)

9.1 विकास की संभावनाएं

9.2 विकास में आने वाली समस्याएं

9.3 समस्याओं के समाधान के सुझाव

9.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष

संदर्भित ग्रंथ सूची (**BUBUKIGRARHY**)

साव. जनपतलाल	–	बस्तर का इतिहास (शक्ति प्रकाशन मंदिर 256 इलाहाबाद) प्रथम संस्करण 1983	1983
बेहार प्रो. रामकुमार	–	बस्तर आरण्यक प्रथम संस्करण (धर्मार पब्लिकेशन, जगदलपुर)	1974
मिश्रा डॉ. जगन्नाथ प्रसाद	–	आधुनिक भारत का इतिहास प्रथम संस्करण 1974 द्वितीय संस्करण 1979 तृतीय संस्करण 1983 उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान महात्मा गांधी मार्ग लखनऊ	1974
शर्मा डफा. सुधीर	–	छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक वैभव प्रथम संस्करण 1995 गीता कम्युनिकेशन, रायपुर	1995
अग्रवाल किशोर	–	बीसवीं शताब्दी का छत्तीसगढ़ प्रथम संस्करण 2006 वैभव प्रकाशन, अमीन पारा रायपुर	2006
वर्मा डॉ. भगवान सिंह	–	छ.ग. का इतिहास (1947) चौथा संस्करण 2003 एम.पी. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल	2003
सक्सेना सुधीर	–	भूमिकाल–बस्तर का भूचाल प्रथम संस्करण 2006 (छ.ग. राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी)	2006

अग्रवाल, आर.सी.	–	व्यवसाय प्रशासन एवं प्रबंधक नवयुग साहित्य सदन आगरा	2006
गुप्ता, डॉ.के.एल.	–	भारत की आर्थिक समस्याएं भारतेंदु हिन्दी साहित्य समिति, बिलासपुर	2002
काम्बले, जे.आर.	–		1986
सेठी, ओमप्रकाश	–	चांपा निर्देशिका व व्यक्ति दर्शन प्रथम संस्करण 1970 हिन्दी साहित्य परिषद चांपा बिलासपुर साहित्य प्रेस	
बेहार, डॉ. रामकुमार	–	छत्तीसगढ़ी संस्कृति व विभूतियां प्रथम संस्करण 2003 छ.ग. शोध संस्थान 370 सुंदर नगर रायपुर,	2003
शुक्ला, डॉ. शंतू	–	छ.ग.का सामाजिक व आर्थिक इतिहास 2001 नेशनल पब्लिकेशन हाउस 23 दरियागंज दिल्ली	
जैन, कैलाश जैन	–	M.P. Through the a Study of Culture of civilization Volume II, B.R. Publication.	
मिश्रा, डॉ, रामेंद्र	–	छ.ग. का प्रशासनिक इतिहास प्रथम संस्करण 1981 पुस्तक प्रतिष्ठान सत्ती बाजार रायपुर	2001

मिश्रा, डॉ. जयप्रकाश	–	एम.पी. की सामाजिक व आर्थिक समस्या प्रथम संस्करण 1997 रानी दुर्गावती वि.वि. आयोग के अंतर्गत	1997
बेहार, श्रीमती निर्मला	–	बस्तर आरण्यक (1876 से 1921) प्रथम संस्करण 1985	1985

बस्तर का आदिवासी संघर्ष दैनिक व साप्ताहिक पत्र–पत्रिकाओं से लिया गया।

शुक्ला, डॉ. सुरेशचंद	–	छ.ग. का समय इतिहास प्रथम संस्करण 1 जुन 2003 शिक्षादूत ग्रंथागार प्रकाशन रायपुर	2003
पाणिग्रही, जितेन्द्र प्रसाद	–	आई. प्रवीर द आदिवासी गांड (हिन्दी रूपांतरण) प्र. संस्करण 2000	2000
पांडे, डॉ. ऋषिराज	–	छ.ग. दक्षिण कौशल के कल्चुरी प्र. संस्करण 2008 छ.ग. राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी रायपुर	2008
शुक्ला डॉ. हीरालाल	–	प्राचीन बस्तर अर्थात् दण्डकारण्य का सांस्कृतिक इतिहास प्र. संस्करण 1978 विश्व भारतीय प्रकाशन नागपुर– 12	1978
गुप्ता, प्यारेलाल	–	प्राचीन छ.ग. प्रथम संस्करण 1973 (एकहजार प्रतियां) लीडर प्रेस इलाहाबाद	1973
दास, डॉ. नागेंद्र सिंह	–	डेव्हलपमेंट ऑफ हेण्डजलूम इंडस्ट्रीज दीप एंड दीप पब्लिकेशन न्यू देहली	1986

		प्र. संस्करण 1996	
त्रिपाठी, बद्रीविशाल	–	भारतीय अर्थव्यवस्था प्र. संस्करण 2000 किताब महल, इलाहाबा	2000
भट्टाचार्य डॉ. सुनीलकांत	–	भारत साजाजिकसंरचना प्रथम संस्करण 2004 राधा पब्लिकेशन देहली	2004
शर्मा, डॉ. ब्रम्हदेव	–	आदिवासी विकास एक सिद्धांत विवेचना प्रथम संस्करण 1980 द्वितीय 1982 तृतीय 1986	1986
कैलाश,	–	ट्रायबल एजुकेशन एंड औक्यूपेशन प्रथम संस्करण 1993 मंयक पब्लिकेशन लि.	1993
भंडारी, बी.एस.	–	विपणन प्रबंधक प्रथम संस्करण 2005 यूनिवर्सल पब्लिकेशन आगरा	2005
त्रिवेदी, डॉ.आर.एन. एवं शुक्ला डॉ.डी.पी.	–	रिसर्च मेथ्डोलॉजी (कालेज बुकडिपो जयपुर)	2000
जैन, बी.एन.	–	शोध प्रविधि व क्षेत्रीय तकनीकी रिसर्च पब्लिकेशनजयपुर	2001
राव, के.वी.	–	रिसर्च मैथ्डोलॉजी इदन कांमर्स एण्ड मैनेजमेंट	2004
कोटलर फिलिप	–	मार्केटिंग मैनेजमेंट. प्र. संस्करण	2005

चौघरी, नीरज	–	छ.ग. का ज्ञान प्र. संस्करण लुसेंट पब्लिकेशन	2009
उपाध्याय, विजय	–	भारत में जनजातीय, संस्कृति प्रथम संस्करण 1984 अष्टम आवृत्ति 2004	1984
त्रिभुवन, डॉ. रॉबिन	–	केयर्स एंड फस्टिवल ऑफ इंडियन ट्राइल्स प्र. संस्करण 2003 डिस्कवरी पब्लिकेशन हाऊस दिल्ली	2003
सिन्हा, ए.पी.	–	रिलिजियस लाईफ एन ट्रायबल इंडिया प्रथम संस्करण 1989 क्लासीकल पब्लिकेशन, नई दिल्ली	1989
पटेल, एम.एल.	–	ट्रायबल रिसर्च इन इंडिया इंटर इंडिया पब्लिशन,	1994
श्रीवास्तव, डॉ.वी.के.	–	Tribal Scenario of M.P.& C.G. First Edition 2003	2003

-00000-
0000
000
00
0

प्रकाशित शोध ग्रंथ

राव तेलंग डॉ. भालचंद्र	छ.ग. हल्बी भतरी बोलियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन–1986, नागपुर वि.वि की पीएचडी का उपाधि प्राप्त शोध प्रबंध।
भंडारी भागवत	ट्रायवल मैरिज एंड सेक्स रिलेशन 1989
श्रीवास्तव डॉ. एस.	मध्यप्रदेश में जनजातियों का जीवन
चन्द्राकर एम.आर.	बस्तर संभाग में कुटीर व लघु उद्योगों का विकास एवं संभावनाएं
साहू डी.डी.	रायपुर जिले में हथकरघा उद्योगों का विश्लेषनात्मक अध्ययन
डॉ. प्रधान अशोक	जनजातिय जनांकिकी छ.ग. सबरा जनजाति के विशेष संदर्भ में 2004

प्रकाशित शोध आलेख

संदर्भ छ.ग.	पत्रकार प्रकाशन प्रा. लिमिटेड रायपुर
छ.ग. एक अध्ययन	साहित्य पब्लिकेशन आगरा
छ.ग. सारगर्भित	डॉ.एम.एस. सिसौदिया
रामतीर्थकर	शिल्प संस्थाओं में सरकार का हस्तक्षेप एक बुनाई अध्ययन पत्रिका सितम्बर 1992

शर्मा डॉ. प्रभाकर एवं जोगलेकर — अपग्रेडेशन आफ हेडलूम को आपरेटिव ए स्टडी पत्रिका इंडियन को. आपरेटिव रिव्यूजन 2002 (Tribal 2005 (Complied by K.Sahu Human Rights Documentation Indian Social Institute, New Delhi)

समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं

1. उद्यमिता — उद्यमिता विकास केन्द्र भोपाल
2. स्मारिका — जिला हाथकरघा संघ मर्यादित, रायपुर
3. नवभारत — दैनिक समाचार पत्र
4. दैनिक भास्कर — दैनिक समाचार पत्र
5. देशबंधु — दैनिक समाचार पत्र
6. नई दुनिया — दैनिक समाचार पत्र
7. स्मारिका — छ.ग. राज्य हाथकरघा विकास 2002–2005 प्रथम वार्षिक सभा सह. संघ मर्यादित, रायपुर 2002–2005
8. संस्था का ज्ञापन — आदर्श सह. मुद्रणालय बनुकर सह. संस्थाओं के लिये उपविधियां, जगदलपुर

प्रकाशित एवं अप्रकाशित शासकीय अभिलेख

पुस्तिकाएं एवं पत्रिकाएं

1. नदीम हसनैन — जनजातीय भारत जवाहर पब्लिशर्स 1990
2. नई रौशनी — जिला प्रशासन रायपुर
3. जिलेवान बुनकर सहकारी समिति–हाथ करघा संचालनालय छ.ग. शासन रायपुर
4. छ.ग. साामान्य अध्ययन — शिक्षादूत प्रकाशन रायपुर

5. दसवीं पंचवर्षीय योजना — हाथकरघा संचालनालय 2002–2007

6. शासकीय विभागों व सार्वजनिक उपक्रमों में वस्त्र क्रय की नवीन व्यवस्था — वाणिज्य एवं उद्योगों, ग्रामोद्योगो एवं उपक्रम विभाग छ.ग. शासन रायपुर पत्र 31.01.2002

7. प्रस्ताव (पुस्तिका) — छ.ग. शासन रायपुर

8. जय आदिवासी जय झारखंड (पत्रिका)

9. भारत का राजपत्र असाधारण 2 जून 1999 नई दिल्ली

10. Websites :-

www.google.co.in
www.Bastriya.com
www.yahoo.com

निर्देशक	सह–निर्देशक	शोधार्थी
श्रीमती डॉ.हंसा शुक्ला (प्राचार्य) स्वामीश्री स्वरूपानंद सरस्वती महा. आमदीनगर, हुडको, भिलाई छ.ग.	डॉ.आर.पी.अग्रवाल सहा. प्राध्यापक वाणिज्य विभाग कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय भिलाई नगर, सेक्टर–7	श्रीमती शीतल शर्मा

प्राचार्य

कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भिलाईनगर, सेक्टर–7, छ.ग.

शोध केन्द्र :– कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर, सेक्टर–7